

This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit. The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website https://kksu.co.in/

Digitization was executed by NMM

https://www.namami.gov.in/

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi https://egangotri.wordpress.com/

M-2552	शिर्षक	ग्रथकार	विषय	विस्तार (पुर्ण) अपूर्ण)	टिकाकार	आकार	पृष्ठे	लिपी	सामग्री	Lines per page	Letters per line	Condition & age (शके / विकम सवंत)	Additional Particulars / Remark
	श्रिवश्रह्मिकिकार्योक-		Aman's	3500				The grant	401019	09	33		

त्रीमलेशायनम् ॥आग्रह्मपिकर्नारं हियाप्ति ने रात अतं। आग्रह्मपिहेरों से अग्रिक्ति में अग्रह्मिक में अ विद्याप्य पूर्णमहिन यम्भाद्य ॥ २॥ हे शहरा च यस च सर्वना मुक्द य यहा ॥ भा मेड पहिन्येय ती रे 'रे तुकार येते ।। भाजा जा की र द्रांश भाषी: साति:। स्था त्यया कु वन णकता फुळ पुषा क्षतं दक्षिणां ग्ट ही सा आ चार्य न मुक्य यह हा गर्थ या वा सा आसनोपि रितेषेत्य इतिक्लेरिआ गाहने ॥ आगहिया मित्रीपे लिखे याथ

मान्यी श्री प्राथित ने सार्थ सामा आग छ सुद् में हमें यसे सिनं सिन्धों में या सिप् कार्य से सिन्धों में या सिप के प्राथित रित्रं लाक भारिया।। उध्यतासिव राहण स्वीत् वन्सा गरः। उष्टास्नानिक पणिसं विधितत्वीपरि ॥ अगाध्य राग्यन्य स्थ पत्तिस्म संन्यिय युग्र वी घा वा एथि वी घु रवस्प वा॰ यञ्जुः आवा हुनेण इस्था हुनेता ॥ आवा हु या पिहेंच रो

.11511.

रभर निर्मितं सी पिरक्षितं चुझ नार्मः॥ महाते अं महा विर्ध्मित्रेतं ब्रह्म छा भ्यर् ॥ तेन हर्षा येनपाने पापना आजा बाहन्। आबाहित । आबाहित । स्वाम हर्व अर्प्य करिय नी रमं। स हवे स्तजाता सिवं दिता सिस्रास् रहे। सो कार्यसिति हे सासेव सो ख्यंकारे जव।। यथा या रगा रगा रगा रगा स्ट ता समहीत् के गतथा ममाविसं ता न के कर्या ज्ञा मरंग्ञगाग्छ त्र गुनर्द हुन यहा स्मिन्सान्त्र पो हुन गहुना आवाहन गञ्जातनते ।

ण्या गृह येत् ॥ आगह नं "छ। पुणी फ्ळं समायुक्तं ना ना द्वीरक्त संयु नं ॥ सर्वाण्या गहनं कार्यक्षारं सक्तारं के उक्तार चेत्र ॥ धरा। ष्ट्रियसपिमधुसाथा।।तिलाश्च सर्षपाश्चेअ ध्यो अ छाग्ज-यते।।१९।। कन्याहाने विवाह न प्रतिषायज्ञकर्मिणा ॥ सब् बुधर्मकार्य बुआएंग अ ध्यं उन्यते॥४०॥ ॥ ध्या ध्या ध्या द्या वा नहें संक्षणी क्यासके १६६ ती 11611.

CC-0. In Public Domain. Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

[OrderDescription]
,CREATED=08.01.20 14:28
,TRANSFERRED=2020/01/08 at 14:30:29
,PAGES=5
,TYPE=STD
,NAME=S0002500
,Book Name=M-2553-DHARAMKARYIK
,ORDER_TEXT=
,[PAGELIST]
,FILE1=00000001.TIF
,FILE2=00000002.TIF

FILE3=00000003.TIF ,FILE4=00000004.TIF ,FILE5=00000005.TIF